Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

निराला के काव्य में नारी

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

निराला के काव्य में नारी

Dr. Sudesh Rani

Bed, M.Phil, P.hd in Hindi

समाज में ऊँच–नीच मिटाना निराला का एक सामाजिक कर्तव्य था, उसी तरह नारी के समान अधिकारों का संघर्ष स्वाधीनता आन्दोलन का अभिन्न अंग था। पुरुष घर के बाहर अंग्रेजों का दास, घर में उसकी दास, पुरुष की दासी–नारी। इस दोहरी परतन्त्रता को खत्म किये बिना राष्ट्र कैसे स्वाधीन हो सकता हैं निराला जी ने स्वयं लिखा है– ''हम लोग स्वयं जिस तरह गुलाम है उसी तरह अपनी स्त्रियों को भी गुलाम बना रखा है–बल्कि उन्हें दासों की दासियां कर रखा हैं। इस महादैन्य से उन्हें शीघ्र मुक्ति देनी चाहिए।''

प्रकृति ने स्त्री व पुरुष को इस तरह बनाया कि उनका कार्य क्षेत्र अलग–अलग रहें। स्त्री कोमल है, पुरुष कठोर है। इस भेंद के अनुरुप उनके धर्म भी अलग–अलग हैं। निराला कहते है कि वे दिन बीत गये जब स्त्री के लिए यह प्रशंसा की बात समझी जाती थी। कि वह चित्र लिखे कपि को देखकर डर जाती थी, परन्तु आवश्यकता है हर एक मनुष्य के पुतलें में चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, कोमल और कठोर दोनों भावों का विकास हो अब दोनों के लिए एक ही धर्म होना चाहिए। पुरुष के अभाव में स्त्री हाथ समेटकर निश्चेष्ट बैठी न रहे। उपार्जन से लेकर सन्तान पालन गृहकार्यआदि वह संभाल सके ऐसा रुप, ऐसी शिक्षा उसे मिलनी चाहिए। पहले दोनों के भाव और कार्य अलग–अलग थे अब दोनों के भाव और कार्यो का एक ही में साम्य होना आवश्यक है।

''स्त्रियों को स्वावलम्बी बनाना चाहिए क्योंकि 'स्वावलम्ब कोई पाप नही प्रत्युत पुण्य है।' हमारे देश के लोग इस समय आधे हाथों से काम करते हैं, उनके आधे हाथ निष्क्रिय है जब स्त्रियों के हाथ कार्य में लग जायेंगे, कार्य की सफलता हमें तभी प्राप्त होगी।''

निराला का कहना था कि इस घरेलू दासता का अन्त होना चाहिए। देश के राजनीतिक–सांस्कृतिक जीवन में पूरी शक्ति नही आ सकती जब तक समानता के आधार पर उसमें पुरुषो के साथ स्त्रियां भी भाग न लेंगी उन्होने लिखा–''अब घर के कोने में समाज तथा धर्म की साधना नहीं हो सकतीं। जमाने ने रुख बदल दिया है। हमारे देश की लड़कियों पर बड़े–बड़े उत्तरदायित्व आ पड़े है उन्हें वायु की तरह मुक्त रखने में हमारा कल्याण है तभी वे जाति–धर्म समाज के लिए कुछ कर सकेगी।

हम स्त्री–स्वतन्त्रता के कार्य में पुरुषों से मद्द करने के लिए कहते हैं क्योकि नारी ही भावी राष्ट्र की माता है, मूर्ख, पीड़ित और पराधीन माता से तेजस्वी, स्वतन्त्र और मेधावी बालक–बालिकायें नहीं पैदा हो सकती है जिससे राष्ट्र का सर्वाश जर्जर हो जाता है। निराला जी ने स्वयं लिखा है कि ''ज्ञान के बिना जीवन व्यर्थ है, निर्वाह होना कठिन है। स्वावलम्बन नहीं आता, 'स्वावलम्बन कोई पाप नहीं प्रत्युत पुण्य है।' हमारे देश के लोग इस समय आधे हाथों से काम करते है, उनके आधे हाथ निष्क्रिय है जब स्त्रियों के हाथ कार्य में लग जायेगें, कार्य की सफलता हमें तभी प्राप्त होगी।''

निराला जी स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के बहुत बड़े प्रशंसक थें क्योंकि उनके प्रयत्न से ही स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार हुआ, उन्हे इस बात की प्रसन्नता थी। ''स्त्री समाज को उठाने वाले परिचयी शिक्षा प्राप्त पुरुषों में स्वामी जी बहुत आगे थे और वह संसार और मुक्ति दोनों प्रसंगों में पुरुषों के बराबर नारियों को अधिकार देते थे। निराला स्वाभावतः साहित्य में स्त्रियों के योगदान के प्रति बड़े सजग थें, वे हर प्रकार से उन्हे प्रोत्साहन देते थे और साहित्य के पूर्ण विकास के लिए उनका योगदान आवश्यक मानते थे, उनका विचार था कि साहित्य में स्त्रियां पुरुषों के समकक्ष हैं उनका योगदान युवा कवियों से कम न था। साहित्य और कला क्षेत्रो में वे पुरुषों से आगें बढ़ सकती थी।

स्त्री शिक्षा में निराला जी की दिलचस्पी का एक विशुद्ध साहित्यिक कारण भी था, लड़का जब तक माँ से खड़ी बोली नही सुनेगा तब तक वह सहज भाव से खड़ी बोली को मात्र भाषा नहीं स्वीकार कर सकता, वही बच्चा भविष्य के हिन्दी साहित्य का महाकवि हैं जिसने अपनी माता के मुख से साफ–साफ शुद्ध परिमार्जित सरल, श्रुति–मधुर तथा मनोहर खड़ी बोली के सुनने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

निराला जी नारी शिक्षा तथा स्वतन्त्रता को विशेष महत्वपूर्ण मानते थे, वे चाहते थे कि स्त्रियाँ शिक्षित हों जिससे उनके बच्चे एक समर्थ साहित्यकार बनें। निराला जी जहाँ किसी स्त्री को इस आदर्श के निकट पहुँचते देखते थे वह भाव–विह्वल हों उठते थे, गद्य में विचार और तर्क का स्थान उनकी कविता ले लेती थी।

निराला जी को शिक्षित प्रगतिशील युवतियों को देखकर बहुत जल्दी प्रभाव की ज्योर्तिमयी तरंगे याद आने लगती थी। ''वैसे तो संसार के प्रत्येक साहित्य में नारी का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है, प्रत्येक भाषा के साहित्य में हमें नारी का वर्णन मिलता है। हिन्दी साहित्य के तो प्रत्येक युग में नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आदिकल में वह युद्ध व वीरतापूर्ण वर्णनों की मुख्य प्रेरणा रही। सन्त काव्य के अर्न्तगत उसको कामनी कहकर पाप का सूत्र एवं नरक का हेतु बनाया गया। भक्तिकाल में वह सहानुभूति की पात्र रही, उसके माता रूप की आराधना की गई तथा उसके कामनीत्व को उपेक्षा और कही–कहीं निन्दा तक की गई। समाज में किसी सीमा तक उसे हीन ही समझा गया।''

रीतिकाल के काव्य में नारी को लेकर अनेक रचनायें लिखी गई परन्तु वह भोग की वस्तु बनी रही। आधुनिक काल में नारी के प्रति दृष्टिकोण बदल गया। वह हीन ही समझी गयी न त्याज्य

www.ignited.in

ही। भारतेन्दु युग में उसके उद्धार की चर्चा की गई। द्विवेदी युग में उसके उद्धार में उसके प्रति सहानुभूति एवं आदर का भाव जागृत हो उसके मातृव्य को लेकर उसको महिमा मण्डित किया गया। संक्षेप में उसके प्रति भक्तिकालीन दृष्टिकोण ही रहा।

छायावाद युग में नारी के विविध रूपों को देखा गया। नारी प्रेयसी बन गयी परन्तु उसके प्रति दृष्टिकोण आदर्शवादी ही बना रहा।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो

विश्वास रजत नग पग तल में

पीयूष–स्त्रोत सी बहा करो,

जीवन के सुन्दर समतल में। –जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

'अपरा में छायावाद और प्रगतिवाद इन दो युगों में रची हुई कवितायें संगृहीत है। 'निराला' ने नारी के प्रति आदर्शवादी और भोगवादी दोनों ही दृष्टिकोण अपनायें है। भोगवादी दृष्टिकोण से वह प्रेयसी है। निराला की प्रेयसी प्रकृति में सर्वत्र व्याप्त है। आदर्शवादी दृष्टि से यह जगत–माता, परमशक्ति परम आराध्या आदि हैं।

निराला प्रकृति में प्रेयसी नारी का दर्शन करते हैं प्रेयसी नारी का वर्णन करते समय वह एकदम रीतिकाल में पहुँच जाते हैं।

नखशिख–सौन्दर्य का वर्णन करते हैं तथा अनुभाव–विधान द्वारा सम्भोग श्रृंगार की व्यंजना करते हैं।

'जूही की कली' में एकदम रीतिकालीन नायिका दिखाई देती है परन्तु वह वासना के कदम से सर्वथा मुक्त रहती है।

विजन–वन वल्लरी पर,

सोती थी सुहाग भरी,

स्नेह–स्वप्न–मग्न–अमल–कोमल–तनु–तरूणी

जूही की कली।

निराला स्वभाव से भावुक कवि और आदर्शवादी चिन्तक रहे। उनकी दृष्टि में नारी का स्थान नर से कहीं अधिक उच्च एवं श्रेष्ठ है। निराला की माता नारी महिमा–मडिण्त एवं आराध्या है उन्होंने 'नारी' को आदि शक्ति जीवन की मूल प्रेरणा आदि के रूप में अंकित किया है।

'राम की शक्ति पूजा' और 'नाचे उस पर श्यामा' आदि कविताओं में नारी को रागान्त शक्ति सामर्थ्य का स्त्रोत बताया गया है। राम की विजय का कारण नारी द्वारा प्रदत्त शक्ति ही है। राम जब रावण के सम्मुख हत–प्रभ और पराजित से होने लगते हैं तब वह कहते हैं–

बोले रघुमणि–मित्रवर, विजय होगी न समर

यह नही रहा नर–बानर का राक्षस रण,

उतरी पर महाशक्ति रावण से आमन्त्रण।

राम महाशक्ति की आराधना आराधन करते हैं। महाशक्ति प्रकट होती हैं उससे वरदान प्राप्त करके राम रावण पर विजय प्राप्त करते हैं।

भारतीय–वन्दना, शरण में जन–जननि, मातृ–वन्दना आदि कई कविताओं में निराला ने नारी के माता रूप के प्रति अपने श्रद्धा सुमन चढ़ाये हैं।

7.1 नारी का सौन्दर्य–चित्रणः–

निराला स्वभाव से पुरूष हैं उनकी कल्पनाएँ पुरूषोचित है उनकी कला में नारी के रूपों के प्रति विशेष मोह नहीं है। यही कारण है कि उनमें नखशिख एवं समग्र शरीर दोनों ही के सुन्दर रूपों के दर्शन हो जाते हैं। 'जूही की कली' और 'सन्ध्या सुन्दरी' के वर्णन मानवीकरण की शैली पर किये गये है। नायिका–सौन्दर्य वर्णन की पद्धति पर इन मानवीकृत सुन्दरियों के चित्र देखते ही बनते हैं– 'सन्ध्या सुन्दरी' का यह स्वरूप देखिये–

अलसता की सी लता

किन्तु कोमलता की सी कली

सखी नीखता के कन्धे पर डाले बाँह

छाँह सी अम्बर पथ से चली।

7.2 नारी के प्रति सहानुभूतिः–

हिन्दू समाज की विधवा सदा से दीन प्राणी रही हैं। वह सर्वाधिक शोषिता प्राणी रही हैं उसकी दशा देखकर निराला का ह्रदय वषीभूत हो उठता है। 'विधवा' कविता में नारी का यह करूण चित्र देखिये–

''उस करूणा की सरिता के महिन पुलिन कर

लघु टूटी हुई कूटी का मौन बढ़ाकर

अति छिन्न हुए भीगे अंचल में मन को

दुख रूखे–सूखे अधर–त्रस्त चितवन को

यह दुनिया की नजरों से दूर बचा कर

रोती है अस्फुट स्वर में।''

7.3 भारतीय नारी की कुल लालना का चित्रणः–

निराला ने पतिप्राणा भारतीय नारी के अनेक मनोरम चित्र अंकित किये हैं। उनकी दृष्टि से वह सौन्दर्य सरोवर की तरंग है परन्तु उसमें 'किन्तु नहीं चंचल उद्दाम वेग।'

वह नव बसन्त की किसलय–कोमल लता है। जो किसी विटप के आश्रय में मुकुलता और अवनता है। वह भारतीय नारी है इस कारण उसमें कोई चाह नहीं है।

उसमें कोई चाह नहीं हैं।

विषय–वासना तुच्छ उसे कोई परवाह नहीं हैं।

www.ignited.in

तभी तो अपने प्रति आशक्त पति को लक्ष्य करती हुई रत्नावली कह उठती है–

धिक्! आय तुम यां अनाछूत

धो दिया श्रेष्ठ कुल–धर्म धूत

राम के नहीं काम से सूत कहलाये

हो बिके जहाँ तुम बिना दाम

वह नहीं और कुछ हाड़ चाम

शिक्षा, कैस विटाय पर आये।

भारतीय वधू के प्रेम की एकान्तता का जो वर्णन निराला ने किया वह प्रायः अप्रतिम है–

यौवन–उपवन का प्रति बसन्त

है वही प्रेम उसका अनन्त

है वही प्रेम का एक अन्त।

7.4 नारी के सामान्य चित्रः–

निराला ने नारी के शरीर की ओर कम, ह्रदय, मन और आत्मा के सौन्दर्य की ओर अधिक देखा है उन्होंने नारी का वर्णन करते समय प्रायः मानसिक चित्र ही खींचे हैं, परन्तु कहीं–कहीं पर सामान्य मानव धरातल पर उतर आते हैं। ऐसे स्थलों के वर्णन स्थूल हैं और सौन्दर्य का स्वरूप बहुत कुछ मांसल हो गया है।

सरोज–स्मृति एक शोकगीत है इसका रचना काल सन् 1935 है। इसकी रचना निराला जी ने अपनी एक मात्र पुत्री सरोज की मृत्यु के अवसर पर की थी यह एक उच्चकोटि का शोकगीत है।

''यह कविता जिन परिस्थितियों में लिखी गई इसका वर्णन डा0 रामविलास शर्मा ने एक प्रत्यक्षदर्शी के रूप में करते हुए लिखा है– 'एक दिन नीचे से पोस्टकार्ड उठाकर ऊपर वापस आये और इतना ही कहा– सरोज नहीं रही। दुःख से उनका चेहार स्याह पड़ गया था। उसे सहन करने के प्रयास में वे कुछ देर तक कमरे में टहलते रहे, इसके बाद अचानक घर से निकल कर घूमने चले गये। दो दिन तक सरोज की कोई चर्चा ही नहीं हुई, एक आलम्बन पाकर सोलह साल पहले की उनकी वेदना उमड़ आयी। जब सरोज केवल सवा साल की थी तब उसकी माता स्वर्गवासिनी हुई, कवि ने संघर्षपूर्ण जीवन के साथ–साथ सरोज नानी की छत्रछाया में बड़ी हुई। उसके भोले मुँह की ओर देखकर ही निराला ने दूसरा विवाह नहीं किया, विवाह योग्य होने पर कवि ने उसका विवाह पं0 शिवशेखर द्विवेदी के साथ कर दिया।''

विवाह के कुछ समय पश्चात् सरोज भयंकर रूप से बीमार हुई और काल कवलित हो गयी, आर्थिक सीमाओं के कारण निराला पुत्री की प्राण रक्षा न र सकें। ऐसी उनकी धारणा रही। पुत्री की मृत्यु ने निराला को वेदना–विह्वल बना दिया और उनकी वही सघन वेदना 'सरोज–स्मृति के रूप में हिन्दी साहित्य को प्राप्त हुई।

सरोज की मृत्यु के आघात ने निराला को तोड़ दिया, निराला स्वभावतः एक उद्धत एवं उत्साही वीर थे वह नियति को भी चुनौती देने वाले थे–

खण्डित करने को भाग्य अंक

देखा भविष्य के प्रति अशंक

वे ही निराला पुत्री की मृत्यु के अवसर पर जर्जर हो उठे उनका वेदना जर्जर ह्रदय पुकार उठता है–

दुखी ही जीवन की कथा रही

क्या कहुँ आज जो नहीं कही

कविता का आरम्भ ही इस प्रकार होता है–

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,

कुछ भी तेरे हित कर न सका

'सरोज स्मृति' के माध्यम से निराला यथार्थ जीवन की एक कटु अनुभूति हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। मस्तक झुकाकर अपने कर्म पर बज्रपात सहने के लिए तत्पर दिखाई देते हैं शीत से त्रस्त होते हुए शतदल के समान वह अपने विफल कार्यों से कन्या का तपर्ण करते हैं–

कन्ये, गत कर्मों का अपर्ण

कर करता मेरा तेरा तपर्ण

यह एक ऐसा शोक गीत है जो पाठक के ह्रदय में करूणा और सहानुभूति का संचार करता है।

'सन्ध्या सुन्दरी' कविता में निराला जी ने प्रकृति को प्रेयसी रूप में चित्रित किया है। वह मानवीकरण के द्वारा प्रकृति वर्णन करते थे वह नारी को प्रकृति में व्याप्त देखते थे उनके लिए प्रकृति एक प्रेयसी थी जो उन्हें अपने अमूर्त आकर्षण द्वारा पग–पग पर प्रेरणा प्रदान करती थी। इस कविता में निराला ने संध्या को एक परी रूप में चित्रित किया है जो धीरे–धीरे आसमान से नीचे उतरती चली आ रही है। तिमिर उसका अंचल है सुन्दरी की गम्भीर मुद्रा सन्ध्याकालीन प्रकृति की स्तिब्धता को ध्वनित करती है।

उसकी गति निस्तब्ध है न तो नुपुरों की रूनझुन है और न अनुराग–राग का अलाप ही सुनाई पड़ता है। वातावरण में चतुर्दिक 'चुप–चुप' शब्द गूँज रहा है। मानो वह सम्पूर्ण सृष्टि को चुप रहने के लिए इंगित कर रहा हो–

दिवसावसान का समय,

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह सन्ध्या सुन्दरी परी सी

धीरे धीरे धीरे

तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास

सिर्फ एक अव्यक्त शब्द सा चुप–चुप–चुप

है गूँज रहा सब कहीं

निराला जी के काव्य में नारी की सम्मानित दशा का चित्रण होता है जो एक छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता है उन्होंने 'राम' की शक्ति 'पूजा' में नारी को महाशक्ति वस्तुतः नारी स्वरूप आदि शक्ति है। इसको अदिति भी कहा गया है। यही महाशक्ति निराला के 'तुलसीदास' में 'रत्ना' रूप में दिखाई देती है। तुलसी को रत्ना उद्‌बोधन देकर सत्य मार्ग पर चलने को प्रेरित करती है।

'राम की शक्ति पूजा' में भी सीता की स्मृति मग्न–हृदय राम को विजय के लिए पुनः सन्नद्ध करती है। नारी ही दोनों स्थलों पर नर की प्रेरक शक्ति के रूप में दिखाई देती है ठीक ही है– नारी–रूपिणी शक्ति के अभाव में मानव शिव के बजाय केवल 'श्व' रह जाता है।

''नारी का विविध एवं नवीन रूपों में चित्रण छायावादियों की प्रधानता रही है उन्होंने बदलती हुई नवीन परिस्थतियों में नारी को विविध रूपों में देखा है नारी के प्रति उनके हृदय में गहरी सहानुभूति है कहीं वह जीवन की सहचरी एवं प्रेयसी है और कही उन्हें वह प्रकृति में व्याप्त होकर अलौकिक भावों में अभिभूत करती हुई दिखाई देती है कहीं वह उसके दिव्य दर्शन की झलक पाते हैं और कहीं नारी का लक्ष्य करते थे कवि प्रेमोन्माद की अस्फुट मनोवृत्ति का चित्रण मिलता है। 'अवरा' की कई कविताओं में हमको नारी के विविध रूपों का चित्रण मिलता है। निराला ने प्रेम की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से ही की है।''

'यामिनी जागी' कविता में यामिनी रूप प्रेयसी का यह चिन देखिये–

(प्रिय) यामिनी जागी

अलस पंकज दृग अरूण–सुख

तरूण अनुरागी

खुले केश अशेष शोभा भर रहे

पृष्ठ–ग्रीवा–वाहु उर पर तर रहे

'तोड़ती पत्थर' कविता में नारी के प्रति निराला की करूणा साकार हो उठती है–

देखा मुझे उस दृष्टि से

जो भार खा रोई नहीं

''राम की शक्ति पूजा' की रचना का प्रतिपाद्य ही यह है कि नारी ही जीवन की प्रेरणा है और वही जीवन की शक्ति है–

देखा राम ने सामने श्री दुर्गा भास्वर

श्री राघव हुए प्रणत मन्द–स्वर–वन्दन कर

होगी जय, होगी जय हे पुरूषोत्तम नवीन

कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन

निराला के लिए उनकी पत्नी जीवन का प्रकाश ही थी–

जो दिया मुझे तुमने प्रकाश

प्राची–दिगन्त–उर में पुष्कल रवि

''यूँ तो निराला जी का समस्त काव्य नारी की स्वतन्त्रता का पोषक है और जहाँ कहीं उन्होंने नारी की चर्चा की है– 'खजोहरा' आदि दो–तीन रचनाओं को छोड़कर उसकी प्रसन्न और शोभाशालिनी मुद्राओं का ही अंकन किया है। परन्तु प्रगतिशील दृष्टि से भी उन्होंने कुछ कवितायें लिखी हैं। उनमें से एक 'वह तोड़ती पत्थर' नारी से ही सम्बन्धित है। उसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके है। उनकी 'वनवेला' कविता का भी स्वच्छन्दतावादी स्वरूप हम देख चुके हैं। इस कविता में निराला ने विवाह सम्बन्धी सामाजिक रूढ़ियों का भी अतिक्रमण किया है, स्वयं अपनी कन्या सरोज के विवाह का जो चित्र उन्होंने 'सरोज स्मृति' कविता में अंकित किया है वह विद्रोही भावनाओं से युक्त है।

अनामिका कविता में– ''वे किसान की नई बहु की आँखें कविता में'' निराला जी ने सीधी–साधी ग्रामीण नारी की सौन्दर्य छवि का जो वर्णन किया है। उसमें भी नारी के प्रति उनकी उज्जवल भावना का परिचय मिलता है कवि निराला ने नारी प्रेम के उस आदर्श की प्रतिष्ठा की है जो साम्राज्यों को भी तिलांजलि दे सकती है।''

7.5 निराला के काव्य में नारी–सौन्दर्य और प्रेम (श्रृंगार रस):–

छायावादी सौन्दर्यानुभूति के कवि निराला की सौन्दर्य–दृष्टि अत्यन्त संयमित और पवित्र है। निराला का काव्य दार्शनिक एवं आध्यात्मिक गद्य से परिपूर्ण होने के कारण उसमें नारी सौन्दर्य के मादक मांसल ऐन्द्रिक चित्र नहीं है चटकीले और गहरे रंग उन्होंने नहीं भरे हैं। उन्होंने तो हल्के रंगों से सात्विक परिधानों में अपनी सौन्दर्य प्रतिमाओं का विन्यास किया है। इस दृष्टि से वे छायावाद के ही प्रसाद और पन्त से भिन्न है। पन्त में सुन्दरतम की ललक अधिक है जबकि निराला ने केवल सुन्दरतम पर बहुत कम दृष्टि डाली है। प्रसाद की मादकता और शारीरिक मोहकता भी निराला के सौन्दर्य–सृजन में नहीं है। निराला ने नारी सौन्दर्य का अत्यन्त सूक्ष्म चित्रण किया है उनके सौन्दर्य शर जिगर को बीधने वाले नहीं, जिगर के पार नहीं जाते हैं, बल्कि हृदय को कोमलता से स्पर्श करते हैं।

संयम और सात्विकता की कोमलता के ही कारण कवि अपनी पुत्री सरोज के 'यौवन–सौन्दर्य' का चित्रण भी सफलतापूर्वक कर गया 'सरोज–स्मृति' में पिता द्वारा किया गया पुत्री का रूप वर्णन, विश्व साहित्य में बेजोड़ उदाहरण है। अपनी पुत्री सरोज के यौवनागम का निराला जैसा प्राणवान पिता कवि ही कर सकता था–

धीरे–धीरे फिर बढ़ा चरण

बाल्य की कलियों का प्रांगण

कर पार, कुंज–तारूण्य सुधर

आयी, लावण्य–भार थर–थर

काँपा कोमलता नव वीणा पर सस्वर

ज्यों मालकोंश नव वीणा पर

नैश स्वप्न ज्यों तू मन्द–मन्द

कूटी उषा जागरण छन्द?

फूटा कैसा प्रिय कंठ–स्वर

माँ की मधुरिमा व्यंजना भर

हर पिता कंठ की तृप्त–धार

उत्कलित रागिनी की बहार

''सूक्ष्म उपमान योजना तथा प्रतीक विधान के सहारे निराला जी सांकेतिक सौन्दर्य चित्र प्रस्तुत करते हैं। उपर्युक्त पंक्तियों में सात्विकता का गुण विद्यमान है यह तो था पिता द्वारा पुत्री का सौन्दर्य चित्रण, जिसमें सात्विकता रहनी ही थी पर अन्यत्र भी निराला ने सर्वत्र अपने सौन्दर्य चित्रण में ऐसे ही सूक्ष्मता, सात्विकता, संयम और सांकेतिकता की विशेषता बनाये रखी है।''

निराला जी का विधुर जीवन भी सम्भवतः इस मर्यादा और संयम का कारण रहा होगा 'अनामिका' की प्रेयसी कविता में भी नारी सौन्दर्य का ऐसा ही सांकेतिक प्रतीकात्मक चित्रण हुआ है–

घेर अंग–अंग को

लहरी तरंग बह प्रथम तारूण्य को

ज्योतिमर्यी लता सी हुई मैं तत्काल

घेर निज तरू तन

नारी के इस ज्योतिर्मय तरूण लावण्य को देखने के लिए युवाकुल पतंगों और भौरों की तरह टूट पड़ने लगा।

दर्शन समुत्सुक युवाकूल पतंग ज्यों

विन्धरते मंजु मुख

निराला के समस्त सौन्दर्य वर्णन से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि मादक–माँसल ऐन्द्रिक चित्र प्रस्तुत करना उसकी प्रवृत्ति न थी।

निराला–काव्य में प्रणय का स्मृति रूप बहुत प्रकट हुआ है। इसी से बहुधा सौन्दर्य की अतीत स्मृति पत्र में चित्रण पाया जाता है। 'राम की शक्ति पूजा' में राम के हतोत्साहित हृदय में सीता की स्मृति–वह मिथला का प्रथम मिलन–बिजली सा कौध जाता है। इस प्रथम साक्षात्कार का बड़ा ही मनोमुग्धकारी चित्रण कवि ने किया है पर यहाँ की परिस्थिति का अनुरोध ऐसा है कि सौन्दर्य अत्यन्त सूक्ष्म, सांकेतिक एवं गरिमामय रूप में चित्रित हुआ है, ऐन्द्रिक मादकता ग्रहण नही कर सका, राम के नैराश्य–धन–अंधकार हत–हृदय में जानकी की कुमारिका छवि बिजली सी कौंध गयी जनकवाटिका में लतान्तराल प्रथम मिलन याद आया। नयनों का नयनों से गुप्त, मौन किन्तु प्रिय संभाषण हुआ, वह पलकों का उत्थान–पतन वह कथन, अनुराग, पराग, का वह झरना, वह नव–जीवन परिचय, कितनी मधुरिमा है उनके स्मरण में।

ऐसे क्षण अन्धकार धन में जैसे विद्युत

जागी पृथ्वीतनया कुमारिका–छवि, अच्युत

देखते हुए निष्पलक याद आया उपवन,

विदेह का– प्रथम स्नेह का लता अन्तराल मिलन

सीता के इस कामनीय स्मरण से राम का तन सिहर उठा, क्षणभर को मन भुलावे में पड़ गया और एक बार फिर शिव धनुष तोड़ने को भुजाएँ फड़क उठीं।

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है निराला–काव्य में स्मृतिरूप प्रणय का बहुत मादक वर्णन मिलता है। निराला के विधुर जीवन से उसकी यथार्थ संगति बैठती हैं।

'यमुना के प्रति' कविता में भी कवि ने कृष्ण गोपियों के अतीत प्रेम का मार्मिक स्मरण किया है। इस स्मरण में अभाव की एक मीठी–सी टीस और मादकता भर देने वाली प्रणय वेदना पायी जाती है। कवि यमुना से पूछता है कि आज वे नटनागर श्याम, वह वंशीवट कहाँ चले गये? वह युवतियों के चंचल चरणों से झनझनाता पनघट अब कहाँ है? वे श्याम के वियोग में तृप्त नारी शरीर कहाँ है? वे चंचल कटाक्ष, वे प्रिय के साथ वन–वन आखै मिचौनी के दिन, वह स्वच्छन्द गल–बाँही नृत्य, मुग्धरूप का वह क्रय–विक्रय, वह दृढ़ यौवन का पीन उभार, सब कहाँ सपना हो गया है?

वह कटाक्ष चंचल यौवन–मन

वन–वन प्रिय अनुसरण–प्रयास,

वह निष्पलक सहज चितवन पर

प्रिय का अचल अटल विश्वास,

'यमुना के प्रति' कविता में निराला जी ने स्मृति के सहारे जो मादक चित्र और वर्णन प्रस्तुत किये हैं वे इस कविता को स्मृति–श्रृंगार की बेजोड़ रचना सिंह करते हैं।

भाव और कला का इसमें चरम उत्कर्ष पाया जाता है इस स्मृति–श्रृंगार का भी अपना अलग माधुर्य है निराला का प्रणय सांकेतिक एवं मूल प्रणय है। स्मृति श्रृंगार में तो मूकता रहती ही है अन्यंत्र भी निराला ने कहना–सुनना अधिक पसन्द नहीं किया है। दो हृदय आकर्षित हो गये, सम्बन्ध स्थापित हो गया, निकट आ गये– बस यही बहुत है प्राणों का प्राणों से मिलन होने पर मौन छा जाता है वाचालता नहीं रहती मौन मधु हो जाता है।

बैठ ले कुछ देर

आओ एक पथ के पथिक से,

मौन मधु हो जाय

भाव मूकता की आड़ में,

(परिमल)

''निराला ने प्राचीन परम्परा का नख–शिख वर्णन नहीं किया। उनका सौन्दर्य वर्णन सामूहिक रूप में है। अंग–प्रत्यंग रूप में नही। कहीं–कहीं तो वे एक अंग का वर्णन करने में ही सामूहिक छवि दर्शी होते हैं कवि परम्परागत उपादानों से अंग–प्रत्यंग वर्णन नहीं करता है। वह तो समूह–सौन्दर्य का सूक्ष्म भावपूर्ण वर्णन करता है उसकी अभिव्यंजना पद्धति बड़ी प्रभावी है। नव–बधू का सौन्दर्य प्रकट करता हुआ कवि कहता है।''

1 सौन्दर्य–सरोवर की वह एक तरंग

2 बहनव बसन्त की किसलय–कोमल, लता

किसी विटप के आश्रय में मुकुलिता–

किन्तु अवनता।

निराला की उपर्युक्त सौन्दर्य चित्रण और प्रणय–प्रकाशन स्वच्छन्द–प्रेम का ही परिचायक है उनका यह स्वच्छन्द प्रेम भी स्वकीया का प्रेम है परकीया प्रेम वर्णन निराला ने संभवतः कहीं नहीं किया।

निराला–काव्य में सर्वाधिक मांसल और इन्द्रिय उत्तेजक रचना 'गीतिका' की होली बाला गीत है।

नयनों के डारे लाल गुलाब भरे खेली होली

जागी रात सेज प्रिय पति संग रति स्नेह रग धोली

(गीतिका)

'प्रिया के प्रति' कविता में निराला जी ने अपनी स्वर्गीय पत्नी के प्रति स्मृतिमय–करूण–वियोग प्रकट किया है। कवि अपनी पत्नी का स्मरण करता हुआ कहता है कि एक बार यदि उस अज्ञात लोक से तुम आ जाओ, कुछ अपना हाल सुनाओं और हमारा सुनो तो कितना उत्तम हो! कवि को और कोई वासना नहीं वह तो केवल अपनी स्वर्गगता पत्नी के दर्शन करना तथा हाल जानना और अपना जताना चाहता है वह दिखाना चाहता है कि वियोग की चिर ज्वाला ने उसके ह्रदय को कलुषित नही किया, अपितु पावन बना दिया है उसका यह प्रणय कितना पावन कितना उदात्त कितना सात्विक है।

एक बार भी यदि अज्ञान के

अन्तर में उठ आ जाती तुम

एक बार भी प्राणों की तुम

छाया में आ कह जाती तुम

नारी ह्रदय के भीतर बैठकर उसका मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने का सफल प्रयत्न कवि निराला ने किया यही कारण है कि अपने जीवन में नारी को प्रेयसी या पत्नी के रूप में जितने अधिक आकर्षित हुए थे उतने वे उसके मातृत्व के प्रति भी श्रद्धापूर्ण समर्पित थे यही कारण है कि उन्होंने न तो रीतिकालीन कवियों की तरह नारी को काम–क्रीड़ा–कन्दुक के रूप में प्रस्तुत किया और न ही भक्त कवियों की भाँति उसके वासनात्मक प्रेम को त्याज्य ठहराया है।

''निराला ने प्रेम के सहज स्वरूप को प्रस्फुटन को दिग्दर्शन किया है इसमें इच्छा का स्थान मौन रहता है।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आराधना – साहित्यकार संसद, प्रयाग प्रथम संस्करण सम्वत्–2010

2. कुकुरमुत्ता – लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद सन्– 1969ई0

3. गीत गुंज – हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी द्वितीय संस्करण

4. गीतिका – भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद तृतीय संस्करण सम्वत्–2005

5. तुलसीदाय – भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद तृतीय संस्करण सम्वत्–2005